समाजशास्त्र का उद्भव (Emergence of Sociology)

समाजशास्त्र का उद्धव फ्रांस की क्रांति के बाद 1838 में अगस्त काम्ट के द्वारा हुआ था इसलिए अगस्त काम्ट को समाजशास्त्र का जनक भी कहा जाता है।

अगस्त काम्ट ने समाजशास्त्र शब्द का प्रयोग करने से पूर्व इसे सामाजिक भौतिकी शब्द का प्रयोग किया था। समाजशास्त्र का जन्म फ्रांस में हुआ था।

समाजशास्त्र की विषय वस्तु काफी पुराना है इस विषय की उत्पत्ति के पूर्व उस पर चिंतन होते रहे हैं लेकिन उन विषय वस्तुओं पर एक स्वतंत्र विषय के अंतर्गत वैज्ञानिक ढंग से चिंतन कुछ दिनों पहले प्रारंभ हुआ । यूरोप एवं विश्व के अनेक देशों में कुछ ऐसे विचारक समय समय पर आते रहे हैं जिनके विचारों ने समाजशास्त्र को एक पृथक विज्ञान के रूप में जन्म देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

टी बी बाटोमोर ने समाजशास्त्र की उत्पत्ति एवं विकास के प्रमुख चरणों की चर्चा की है जो इस तरह से हैं -

प्रथम चरण : आरंभिक चरण के अंतर्गत हम कुछ प्राचीन विचारकों एवं लेखकों के विचारों को संदर्भित करते हैं इसमें प्लेटो एवं अरस्तू महत्वपूर्ण है प्लेटों ने अपनी प्रसिद्ध कृति द रिपब्लिक एवं अरस्तू ने अपनी प्रख्यात पुस्तक एथिक्स एंड पॉलिटिक्स में तत्कालीन सामाजिक जीवन के अनेक पहलुओं से संबंध चर्चाएं की हैं । इन पुस्तकों में पारिवारिक जीवन रीति रिवाज स्त्रियों की स्थिति आज का एक स्पष्ट वर्णन मिलता है। इन तमाम विचारकों की कृतियां अपने-अपने समाज की समस्याओं के बारे में वर्णन करती हैं। समाजशास्त्र के लिए यह रचनाएं आगे चलकर बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुई हैं।

द्वितीय चरण: मोटे तौर पर इस चरण में हम छठी शताब्दी के 14वीं शताब्दी के कल को देखते हैं इस पूरे चरण में सामाजिक जीवन की अधिकांश व्याख्याएं दार्शनिक ही हुआ करती थी। जिसमें समय-समय पर धर्म का भी सहारा लिया जाता था दूसरे चरण के अंत में कुछ ऐसे चिंतक मिलते हैं जिनके विचारों से मालूम होता है किस काल में दर्शन और धर्म की जगह तर्क प्रधान हो गया। इस काल के प्रमुख विचारको में Aquinas और A. Dante का नाम लिया जाता है। इन विचारकों ने मनुष्य को एक सामाजिक प्राणी ही नहीं माना बल्कि समाज की परिवर्तनशीलता को भी स्वीकार किया। इसके साथ यह भी माना कि परिवर्तन के पीछे निश्चित रूप से कुछ नियम और शक्तियां कार्य करती हैं। इससे साफ जाहिर होता है की इन विचारकों के चिंतन में वैज्ञानिकता का प्रभाव था।

तृतीय चरण : इस काल में 15वीं शताब्दी से आरंभ होता है समाजशास्त्र की पृष्ठभूमि इसी काल में तैयार होती है इसमें सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों पर विस्तृत चर्चाएं देखने को मिलती हैं हाब्स, लाक, रूसो आदि दार्शनिकों ने समाज के उद्भव आदि की विस्तार से चर्चा की थॉमस मोर ने अपनी पुस्तक यूटोपिया में अनेक सामाजिक समस्याओं की चर्चा की। इसी समय सामाजिक समझौते का सिद्धांत प्रतिपादित किया गया।

चतुर्थ चरण: चतुर्थ चरण में ही सही मायने में समाजशास्त्र की पृष्ठभूमि तैयार होती है समाजशास्त्र का विकास एक विशिष्ट विज्ञान के रूप में 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध एवं 20वीं शताब्दी के प्रारंभिक काल में हुआ है। यह आधुनिक समाजशास्त्र का निर्माण कल माना जाता है औद्योगिक एवं फ्रांसीसी क्रांति इस काल की महत्वपूर्ण घटनाओं में से है। इन घटनाओं ने पुरानी सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्थाओं को झकझोर दिया। औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप अर्थव्यवस्था में काफी नए परिवर्तन आए जैसे कल कारखानों का विकास, आधुनिक मुद्रा व्यवस्था, बहुमात्र-उत्पादन, मजदूरी व्यवस्था में परिवर्तन इत्यादि। दूसरी तरफ सामाजिक क्षेत्र में सांस्कृतिक मूल्य एवं धर्म की जड़े हिलने लगी। बुद्धिवाद एवं तर्क का विकास हुआ। गांव के स्थान पर नगरों का विकास सामंती वर्ग की जगह औद्योगिक वर्ग का विकास, विस्तृत एवं संयुक्त परिवार के स्थान पर मूल परिवार का विकास होने लगा। राजनीतिक क्षेत्र में व्यक्तिक स्वतंत्रता लोकतांत्रिक मूल्य एवं सामानता जैसे विचारों का विकास होने लगा। यूरोप में एक नए युग का सूत्रपात हुआ। इसी के साथ-साथ कुछ नई बौद्धिक परंपराओं का उदय हुआ। समाजशास्त्र के विकास में जिन प्रमुख बौद्धिक परंपराओं का योगदान सबसे अधिक रहा उन्हें हम चार भागों में बांट कर देख सकते हैं।

राजनीतिक दर्शन(Political Philosophy) : इस काल के विचारों ने आधुनिक राजनीतिक इस कल के विचार को ने आधुनिक राजनीतिक व्यवस्थाओं जैसे प्रजातंत्र के सामाजिक अध्ययन की बात चर्चा की। उन लोगों ने पुरानी राजनीतिक मूल्यों एवं परंपराओं के उखाड़ फेंकने का सुझाव दिया उनका मानना था कि पुराने मूल्यों के आधार पर नए समाज का निर्माण नहीं हो सकता।

इतिहास का दर्शन (Philosophy of History) : इस काल के प्रमुख विचारको जैसे स्मिथ, हीगल, फर्गुसन, सेंट सायमन, अगस्त काम्ट मार्क्स आदि ने समाज के विकास एवं परिवर्तन का एक नया विश्लेषण एवं दर्शन दिया जिसका बौद्धिक प्रयास आज भी देखने को मिलता है

उद्विकास के जैविक सिद्धांत(Biological Theories of Evolution) : लैमार्क एवं डार्विन जैसे विचारों ने मानव के विकास का एक नया सिद्धांत प्रतिपादित किया जिसका प्रभाव स्पेंसर तथा मॉर्गन जैसे विद्वानों के विचारों में भी दिखाई पड़ता है जैविक विकास के सिद्धांत ने समस्त परंपरागत मान्यताओं को बुखार फेंका और नए वैज्ञानिक चिंतन का मार्ग प्रशस्त किया

सामाजिक एवं आर्थिक सुधार का आंदोलन कुछ विचारों ने औद्योगिक एवं फ्रांसीसी क्रांति से उत्पन्न विभिन्न प्रकार की सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं के अध्ययन हेतु सर्वेक्षण पद्धति के प्रयोग पर बोल दिया और आज भी सामाजिक सर्वेक्षण का प्रयोग एक वैज्ञानिक पद्धति के रूप में किया जा रहा है

समाजशास्त्र के विकास के संबंध में उपयुक्त विचार से जाटलिन सहमति व्यक्त करते हैं, पर उनका कहना है कि समाजशास्त्र की उत्पत्ति दो विरोधी विचारधाराओं के बीच अंतः क्रिया से हुई है :- प्रथम विचारधारा को प्रगति की विचारधारा तथा दूसरी विचारधारा को व्यवस्था की विचारधारा की संज्ञा दी है । पहली विचारधारा को 18वीं शताब्दी की विचारधारा मानी जाती है प्रगति की विचारधारा को मानने वालों की मान्यता यह थी कि समाज प्रकृति का एक अंग है इसलिए प्रकृति का नियम समाज पर भी लागू होता है सामाजिक वैज्ञानिकों का प्रमुख उद्देश्य से उन नियमों की खोज करना है जिस नियम से समाज संचालित एवं परिवर्तित होता है।

दूसरी ओर औद्योगिक तथा फ्रांसीसी क्रांति के फल स्वरुप यूरोपीय समाज एक संक्रांति काल से गुजरा था पुराने नियम मूल्य एवं विचार टूट रहे थे और उसकी जगह पर नए सामाजिक नियम व कानून का जन्म हो रहा था समाज में व्यापक अव्यवस्था फैली हुई थी इसके परिणाम स्वरुप बुद्धिजीवी जगत में एक विरोधी विचारधारा का विकास 19वीं शताब्दी के प्रारंभिक काल में हुआ था जिसे व्यवस्था की विचारधारा के नाम से जाना जाता है। इस विचारधारा का नाम ऐसा इसलिए हुआ है कि इसे मानने वाले विचारक समाज से व्यवस्था को पूर्ण स्थापित करने की बात करते हैं समाजशास्त्र का तेजी से विकास मुख्य रूप से फ्रांस जर्मनी एवं अमेरिका में बीसवीं शताब्दी में हुआ इसके बावजूद की ब्रिटेन में बहुत बड़े-बड़े समाजशास्त्री एवं सामाजिक चिंतक हुए है । वहां के विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र एक विषय के रूप में काफी देर से उभर कर सामने आया 1960 के दशकों तक लंदन स्कूल आफ इकोनॉमिक्स और पॉलिटिकल साइंस के अलावा वहां अन्य विश्वविद्यालय में नाम मात्र का ही समाजशास्त्र था। विश्वविद्यालय स्तर पर अमेरिका में भी समाजशास्त्र इसी शताब्दी के प्रारंभ में प्रचलित हुआ अमेरिका के येलु, कोलंबिया, शिकागो विश्वविद्यालय ने समाजशास्त्र के प्रचार प्रसार में बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान दिया लेकिन सामान्य तौर पर समाजशास्त्र के विकास की गति धीमी रही । समाजशास्त्र यूरोप में पैदा हुआ और अमेरिका में विकसित हुआ जहां से पूरी दुनिया में फैला आज समाचार विश्व के अधिकांश विश्वविद्यालय में पढ़ाया जा रहा है इस विषय की लोकप्रियता इसी से स्पष्ट होती है कि आज इस विषय की अनेक महत्वपूर्ण शाखाएं उभर कर सामने आई हैं जिसमें मौत महत्वपूर्ण शोध कार्य चल रहे हैं तथा दूसरे सामाजिक विज्ञानों के लोग अपने अध्ययनों में समाजशास्त्री दृष्टिकोण को अपना रहे हैं।

भारत में समाजशास्त्र का उदय:-

भारत में समाजशास्त्र एक विज्ञान के रूप में पश्चिमी देशों से ही आया। भारत में कुछ ऐसे विचारक हुए हैं जिनकी कृतियों में हमें प्राचीन सामाजिक व्यवस्था की झलक मिलती है कौटिल्य का "अर्थशास्त्र" मनु द्वारा रचित "मनुस्मृति" आदि प्राचीन ग्रंथो से भारतीय समाज के बारे में जानकारी मिलती है, लेकिन उन कृतियों का स्वरूप समाजशास्त्रीय नहीं था।

भारत में समाजशास्त्र की वास्तविक शुरुआत 1914 में मुंबई विश्वविद्यालय में हुई। बी.एन. सील के प्रयासों से 1917 में कोलकाता विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र के साथ समाजशास्त्र की पढ़ाई एक एच्छिक विषय के रूप में प्रारंभ की गई। 1919 में मुंबई विश्वविद्यालय में नागरिक शास्त्र के साथ समाजशास्त्र का एक संयुक्त विभाग स्थापित किया गया और पैट्रिक गिड्स इसके प्रथम विभागाध्यक्ष बने। बाद में जी.एस. घुरिये इस विभाग के प्रथम भारतीय विभागाध्यक्ष होने का गौरव प्राप्त हुआ। उसके बाद 1921 में लखनऊ विश्वविद्यालय में राधा कमल मुखर्जी के नेतृत्व में समाजशास्त्र का पढ़ाई शुरू हुई। 1921 में ही कोलकाता विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र का अध्यापन कार्य प्रारंभ हुआ।

समाजशास्त्र अपने विकास के तृतीय चरण में 1951 में प्रवेश किया। इस चरण में बहुत सारे महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में समाजशास्त्र की पढ़ाई शुरू हुई और शिक्षा जगत में बड़ी तेजी से समाजशास्त्र एक लोकप्रिय विषय के रूप में उभरने लगा। साथ ही साथ 1952 में डॉक्टर जी एस घुरिए के सौजन्य से "इंडियन सोशियोलॉजिकल सोसाइटी" की स्थापना हुई जिसके माध्यम से सोशियोलॉजिकल बुलेटिन नामक शोध पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ।